Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 3 | MARCH 2024

डेरा बाबा रुद्रानन्द आश्रम (ऊना हि. प्र.)

डॉ. शकुन्तला देवी राणा [1]

[1] सहायक आचार्य हिंदी, राजकीय महाविद्यालय बंगाणा, जिला ऊना, हिमाचल प्रदेश - 174307

ABSTRACT:

KEYWORDS:

PAPER ACCEPTED DATE: 1st March 2024

PAPER PUBLISHED DATE: 2nd March 2024

भारतभूमि देवताओं की भूमि हैं, यह निर्विवाद सिद्ध हैं। भारत में तथा उत्तर भारत में हिमाचल तो विशेष रूप से देवभूमि मानी जाती है। उसी हिमाचल प्रदेश के द्वार पर पर्यंत मालाओं के आँचल में विराजमान, शान्त तथा पवित्र स्थल में हरे-भरे खेतों के मध्य सुशोभित यह आश्रम डेरा बाबा रुटु के नाम से प्रसिद्ध हैं।

इस आश्रम का प्रमुख देवता वेद प्रमाणित अग्नि हैं। कहा भी हैं "अग्निमूर्खा हि देवाः"। स्मृति ग्रन्थों में जहां गुरु के सानिध्य अर्थात साक्षित्व में साधना करने की व्यवस्था दी गई हैं। वहीं गुरु के अतिरिक्त अन्य इष्टों के विषय में व्यवस्था देते हुए अग्नि को भी सर्वमान्य माना हैं। इससे स्पष्ट हैं कि अग्नि के साक्षित्व में शिष्य साधना कर सकता हैं। इसी परम्परा को मानते हुए तथा अग्नि को साक्षी मानते हुए डेरा बाबा रुटु ने लाखों श्रदालु केवल मात्र बाबा रुद्र दवारा स्थापित अखण्ड अग्नि के प्रति अपनी श्रद्वा भेंट करने के लिए अखण्ड धूना (अग्निकुण्ड) के सम्मुख नत मस्तक होते हैं। उतर भारत में ब्रहाचर्याश्रम डेरा बाबा रुद्रु, ग्राम (यज्ञ नगर) नारी, ऊना (हिमाचल प्रदेश) अपनी समसामयिक धार्मिक, सामाजिक, आध्यात्मिक और रचनात्मक गतिविधियों के कारण एक विशिष्ट स्थान रखता हैं। स्थापना से लेकर आजतक लगभग डेढ़ सौ वर्षों से यह संस्थान अपनी धार्मिकविधि का निरन्तर सग्रह करने में संलग्न तथा सक्रिय हैं। इसमें भारतीय प्राचीन संस्कृति के प्रचार एंव प्रसार के लिए वर्तमान संचालक के द्वारा विभिन्न प्रान्तों के विद्वानो के सहयोग से योजना बदरूप से कार्य सम्पन्न किया जाता हैं। इस आश्रम के संस्थापक तथा आदि गुरु अमर योगी श्री बाबा रुटु जी (श्री रुद्रानन्द जी) अपने समय की महानविभूति रहे। उन्होंने अपने तप, त्याग, स्वाध्याय तथा भक्ति के द्वारा जहां अपार सिद्दियाँ प्राप्त की हैं, वही उन्हें वे अपार ऐश्वर्य भी प्राप्त हुए जिनके प्रभाव से अपने भौतिक शरीर के समर्पण करने के बाद भी नित्य अमरत्व एवं नित्य विघ्मानाता को प्राप्त हैं तथा जन हित एवं जनकल्याण की दृष्टि से सर्वोत्तम सेवकों की कामनाओं की पूर्ति करने के लिए स्मरण करने पर अर्थात किसी भी क्षण कहीं पर भी उनका चिन्तन करने पर उनके समीप ही रहते हैं।

डेरा बाबा रुद्रा नन्द की स्थापना 1850 में हुई। इस डेरे ने भारत की वैदिक कालीन धर्म को आगे बढाने का कार्य वखूबी निभाया हैं | इस धर्म के प्रमुख श्री बाबा रुद्रानन्दजी, बाबा श्री परमानन्द जी, बाबा श्री आत्मा नन्द जी तथा वर्तमान डेरा प्रमुख बाबा श्री सुग्रीवानन्द जी हैं। इस डेरा रूद्र नन्द नें कई स्थानों पर अपने डेरो की स्थापना की हैं | इनमे अनन्त महानन आश्रम मली श्री बाबा अच्युतानन्दआश्रम अम्लैहड़ डेरा बाबा रुद्रु धाम प्रमुख हैं | यह संस्था गौ सेवा तथा वैदिक शिक्षा प्रसार में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं | इस संस्था के संस्कृत शिक्षा के प्रचार के लिए वैदिक स्कूल भी हैं यह संस्था सामाजिक कार्यों में भी लगी हुई हैं।

भारत के हिमाचल प्रदेश को देव भूमि का दर्जा प्राप्त हैं। इस देव भूमि पर बहुत से मन्दिर धार्मिक स्थल स्थापित हैं लेकिन इन सभी धार्मिक स्थलों में से एक ऐसा धार्मिक स्थल हैं जहां प्रेत आत्मों से लोगो को मुक्ति मिलती हैं। इस धार्मिक स्थल का नाम डेरा बाबा बडभाग सिंह हैं। इस स्थान पर लोग बुरी आत्मों से मुक्ति प्राप्त करने तथा निसंतान सन्तान प्राप्त करने के लिए आते हैं।

इस डेरे की स्थापना श्री गुरु अर्जुन देव के वंशज श्री बाबा राम सिंह सोढ़ी के पुत्र बाबा बडभाग सिंह जी ने की थी श्री बाबा बडभाग सिंह जी करतारपुर से हिमाचल प्रदेश के ऊना जिले के गाँव मैडी में आकर बस गए | इस स्थान पर बाबा बडभाग सिंह जी ने यहाँ पर रहने वाले नाहर सिंह पिशाच से लोगो को मुक्ति दिलाई थी।

श्री बाबा बडभाग सिंह जी ने न केवल धर्म बल्कि युद्ध में अपनी बीरता दिखाई थी। इन्होने जस्सा सिंह आहुलवालिया के साथ मिलकर नासिर अली खां को पराजित कर सिखों को उसके अत्याचार से मुक्ति दिलाई थी।

यहां बाबा बडभाग सिंह जी ने तपस्या की उस स्थान की देहरा साहिब, मंजी साहिब और वेरी साहिब के नाम से जाना जाता हैं। इस स्थान पर हर वर्ष वैशाखी व होली के दिन लाखों लोग अपनी मन्नते पूरी करने के लिए देश व विदेश से आते हैं।

REFERENCES

1. Ashutosh Kumar: "Deras as sites of electoral mobilisation in Indian Punjab.

2. Surinder Singh & Jasvir Singh: "Deras, Dalit Assertion and Resistance.

3. Message Divine: RSS Beas

4. One Light many Lamps: RSS Beas

5. Die to Live: RSS Beas

6. Sant Marg: RSS Beas

7. Radha Soami Satsang Beas: Jarnail Singh, Jagat Singh, Charan Singh

8. Equilibrum of Love: RSS Beas

9. Ronki Ram:" Social Exclusion, Resistance and Deras: Exploring the Myth of Casteless Sikh Society in Punjab"

10 .Paramjit Judge: "Mapping Social Exclusion in India: Caste, Religion and Borderlands

11. Ronki Ram: "Ravidass, Dera Sachkhand Ballan and the Question of Dalit Identity in Punjab.

12. Dera Sachkhand Ballan Books & Magazines Begumpura Shehar.